स्वाभाविक है कल्पनाशीलता

मेरा 7 वर्षीय बेटा औसत दर्जे का विद्यार्थी है। उसकी समस्या यह है कि वह हमेशा ख़यालों की दुनिया में खोया रहता है। वह अकसर मनगढ़ंत कहानियां सुनाता है। इसी वजह से पढ़ाई के समय वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता। इस समस्या का क्या समाधान है?

नूपुर शर्मा, भोपाल

इस उम्र के कुछ बच्चों में मनगढ़ंत कहानियां सुनाने की आदत होती है। मनोविज्ञान की भाषा में इसे 'मेक बिलीव प्ले' कहा जाता है। क्रिएटिव स्वभाव वाले बच्चों में सहज ढंग से ऐसी कल्पनाशीलता देखने को मिलती है। आप इसे समस्या के रूप में न देखें और न ही उसकी इस आदत को दूर करने की सोचें। अच्छी कल्पना शक्ति भी बुद्धिमत्ता का एक अहम पहलू है, जो इस बात का संकेत देता है कि आपके बेटे के व्यक्तित्व का विकास सही ढंग से हो रहा है। इसके अलावा अगर आपको उसके व्यवहार में कहीं कोई असामान्य आदत जैसे-हमेशा अकेले और उदास रहना या मेहमानों को देखकर छिप जाना आदि नज़र आए तो उसे काउंसलिंग को ज़रूरत है। अगर उसके व्यवहार में ऐसे कोई लक्षण न हों तो चिंता की कोई बात नहीं है। जहां तक पढ़ाई पर ध्यान न देने का सवाल है तो इसकी कई वजहें हो सकती हैं। आजकल अधिकतर स्कूलों में टीचिंग पैटर्न बहुत बोरिंग होता है, जिससे बच्चों के मन में पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी पैदा नहीं होती। इतनी छोटी उम्र में कुछ बच्चों की उंगलियों की मांसपेशियां विकसित नहीं होतीं, इससे वे सही ढंग से नहीं लिख नहीं पाते। इसी वजह से वे सही समय पर क्लास वर्क पूरा नहीं कर पाते। नतीजतन वे पढ़ाई में पिछड़ने लगते हैं। आप सबसे पहले यह जानने की कोशिश करें कि आख़िर किस वजह से आपका बच्चा पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा, फिर उस ख़ास वजह को दूर करने की कोशिश करें। घर पर अपनी और बच्चे की दिनचर्या को नियमित करें, जिसमें पढ़ाई के लिए कोई ख़ास समय निर्धारित हो। फिर आप नियमित रूप से रोज़ाना उसे निश्चित समय पर पढ़ने के लिए बिठाएं। कुछ पेरेंट्स बच्चों को हर वक़्त पढ़ने के लिए टोकते रहते हैं, ऐसा कभी न करें। इससे वह पढ़ाई से दूर भागने लगेगा। उसे खेलने-कूदने और टीवी देखने से न रोकें। इस बात पर भी ग़ौर करें कि आपका बेटा किस तरह की कहानियां सुनाता है क्योंकि ऐसी काल्पनिक कहानियों के माध्यम से बच्चे आपको अपने दिल की बातें बताने की कोशिश करते हैं। अगर उसकी कहानियों में सुंदर और ख़ुश करने वाली सहज बाल-सुलभ बातें हैं तो चिंतित न हों। वहीं दूसरी ओर उसकी कहानियों में डर या उदासी जैसी नकारात्मक भावनाएं नज़र आती हैं तो आप अपने बच्चे को पर्याप्त समय दें। यह जानने की कोशिश करें कि उसकी ऐसी मनोदशा की असली वजह क्या है? अभी आपका बेटा बहुत छोटा है। पढ़ाई को लेकर उसके साथ ज़्यादा सख़्ती बरतना ठीक नहीं है। हमेशा रोक-टोक करने के बजाय प्रतिदिन उससे बातचीत करके स्कूल में होने वाली अन्य गतिविधियों, टीचर्स और दोस्तों के बारे में भी जानने की कोशिश करें। घर पर उसे पढ़ाने के दिलचस्प तरीक़े अपनाएं। इसके लिए आप रोचक क़िस्से-कहानियों और रंग-बिरंगे चार्ट पेपर की मदद ले सकती हैं। उम्मीद है कि इन प्रयासों से कुछ ही महीने में आपको अपने बेटे के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव नज़र आएगा। अगर सुधार नज़र न आए तो किसी चाइल्ड काउंसलर से सलाह लें। ●

पेरेंटिंग टिप्स

गगनदीप कौर
चाइल्ड एंड क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट

- कल्पनाशील बच्चे ज़्यादा क्रिएटिव होते हैं। ऐसे बच्चों को स्टोरी राइटिंग, म्यूज़िक और ड्रॉइंग जैसी ऐक्टिविटीज़ में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- छोटी उम्र में अकसर बच्चे मनगढ़ंत कहानियां सुनाते हैं। उनकी ऐसी आदत को नियंत्रित करने के बजाय बच्चों की बातें समझने की कोशिश करें।
- बच्चों को नए दोस्त बनाने के लिए प्रेरित करें पर इसके लिए उन पर कोई दबाव नहीं होना चाहिए।

पॉजिटिव पेरेंटिंग
जागरण सखी, डी-210, सेक्टर-63, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा, उप्र-201301

अगर आपके मन में अपने बच्चे की परवरिश से संबंधित कोई भी सवाल हो तो आप हमें इस पते पर ज़रूर लिख भेजें। यूनीक साइकोलॉजिकल सर्विसेज की चाइल्ड एंड क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट गगनदीप कौर *सखी* के हर अंक में आपकी समस्याओं का समाधान करेंगी। आप अपने बच्चे की मनोवैज्ञानिक समस्याएं हमें यहां दिए गए पते पर लिख भेजें और साथ में यहां दिया गया कूपन काटकर लिफ़ाफ़े पर चिपकाना न भूलें।

Like us : @JagranSakhi
ईमेल: sakhi@jagran.com